बेस्टसेलर हड़प्पा श्रृंखला का भाग 3

विनीत बाजपेयी

काले मंदिर का रहस्य

Tree Shade Books

प्राक्कथन

नवंबर 1991, फिशरमैन'स वार्फ, सैन फ्रांसिस्को

वह जानता था कि वो अधिक देर तक नहीं छिप पाएगा।

वो संख्या में अधिक थे।

वो गंगा के घाटों से लेकर विख्यात अल्कात्राज़ जेल के पास के जमा देने वाले पानी तक उसका पीछा करने में सफल रहे थे। वह जानता था कि दुनिया के सबसे खतरनाक आदमी उसके पीछे लगे थे... और उन्हें कोई नहीं रोक सकता था।

अभी तो नहीं।

रोहिणी नक्षत्र की भविष्यवाणी तक तो नहीं।

मुझे एक फोन ढूंढ़ना होगा।

मुझे बाबा को बताना होगा।

जितना वो भीगे होने की वजह से कांप रहा था, उतनी ही थरथराहट उस योद्धा की भी थी, जो कड़े युद्धों के अनुभव से यह जानता हो कि उसका समय आ गया था। जब वो यह जान गया हो कि इस मुश्किल से पार नहीं पाया जा सकता था, और उसने अपनी आती हुई मौत और शत्रु की विजय को भांप लिया हो।

लेकिन यह कोई साधारण मनुष्य नहीं था। और उसे आसानी से पराजित नहीं किया जा सकता था। उसने अपने आकर्षक चेहरे से, अपने लंबे भूरे बालों को पीछे की तरफ झटका दिया, और अपने बादामी आंखों को कुछ पल के लिए बंद किया। वो अपनी चेतना को अपनी कुंडलिनी में उतार रहा था, जैसा कि अधिकतर सक्षम वैदिक योगी अपने नश्वर शरीर को हमेशा के लिए त्यागने से पहले करते हैं।

फिर देव-राक्षस मठ का वंशज, अपने दांतों को भींचे, उस ओपन-एयर रेस्तरां के कोने से निकलकर, उस अशुभ रात के अंधेरे में आ गया। वह शटर बंद दुकानों और सूप के स्टॉल की छाया में चलने लगा। जब वो चुपचाप फोन बूथ की तरफ बढ़ा, तो नवंबर की निर्दयी बारिश उसके चेहरे और चमकते काले रेनकोट पर वार कर रही थी। उसे एक अंतिम फोन करना था। उसे अलविदा कहना था।

इससे पहले कि वो उन भेड़ियों के झुंड से भिड़ता।

अकेले अपने दम पर।

एक विशाल अफ़्रीकी-अमेरिकी आदमी, न जाने कहां से आ गया था। वो लगभग सात फीट लंबा था। वो किसी सांड की तरह चौड़ा था और भारी बरसात का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था। उसने अपनी बेल्ट से बड़ा-सा ब्लेड निकाल लिया था।

काशी का तेजस्वी युवक निर्भीक था। वह दानवीय आदमी की तरफ बढ़ा, अपना रास्ता छोड़, अपनी दाहिनी तरफ की ग्रिल से छलांग लगाते हुए, उसने अपने बलिष्ठ बदन को मोड़, एक लात अमेरिकी के सिर पर जमाई।

आदमी विशाल पर्वत की तरह ढह गया, अपना चाकू यूं ही हवा में हिलाते हुए। मठ के वंशज ने फिर एक और लात जमाई, और दुश्मन के हाथ से चाकू गिर गया। वो अमेरिकी के पेट में जीत का अंतिम मुक्का मारने ही वाला था कि उसे अपने पीछे से जोरदार आवाज के साथ, किसी के असहनीय दर्द का अहसास हुआ।

वो मुड़ा और उसने उस अंधियारी, बरसात भरी रात में, स्वयं को दानवों की तरह दिखते सात-आठ आदमियों से घिरा पाया। असाधारण मनुष्य अपने हमलावरों के पीछे दिखते गोल्डन गेट ब्रिज की चमकती लाल रौशनी देख पा रहा था। उनमें से एक ने पहले ही अपनी तलवार से उस पर घातक वार कर दिया था। अन्य दो उस पर अपनी लोहे की जंजीरों से वार कर रहे थे।

उसके बदन से रक्त यूं बह रहा था, मानो फटे हुए गुब्बारे से पानी निकल रहा हो। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा रहा था। वो जानता था कि उसका अंत नजदीक था। लेकिन उसने स्वयं को समेटते हुए, ठंडे पसीने को झटका और एक उनका मुकाबला करने के लिए खड़ा हो गया।

लेकिन वो जानता था।

इसी तरह मेरा अंत होगा। इस बरसाती रात में। अपनों से दूर।

एक निर्मम हत्या। जैसा कि भविष्यवाणी में कहा गया था।

'बाबा.....!' दर्द और तकलीफ से सुबकते हुए, वो फोन में चिल्लाया। 'मैं... मैं बोल रहा हूं... बाबा...'

वो फोन बूथ के ग्लास पैनल के सहारे टिका हुआ था। बूथ की दीवारें इस पवित्र आत्मा, सक्षम योगी और अद्भुत दक्ष योद्धा के रक्त से सनी थीं।

'हां, मेरे पुत्र, मैं जानता हूं, तुम ही हो... मैं जानता हूं, तुम ही हो!' वृद्ध द्वारका शास्त्री रोते हुए चिल्लाए।

मठाधीश जानते थे कि क्या हो रहा था। उनका उससे सामना हो चुका था। आख़िरकार, इतने साल धरती की काली ताकतों से लड़ते हुए, शास्त्री वंश का एक और वंशज उस काले अभिशाप की बलि चढ़ने वाला था।

'मैं जा रहा हूं, बाबा...' वो सिसका। 'लेकिन मैं उनसे खूब लड़ा, और मैं बिलकुल बहादुरी से लड़ा... बाबा...'

वह अब बेहोश होकर जमीन पर गिर गया, फोन का रिसीवर अपने तार के साथ उसके कान के पास लटका हुआ था।

'कुछ कहो... कुछ बोलो... मेरे बच्चे!' द्वारका शास्त्री सुबकियों में डूबने से पहले फोन पर चिल्लाए।

वह हिला। काशी का वो आदमी, इतनी आसानी से, इतनी जल्दी नहीं मरने वाला था।

अपनी बची-खुची जान समेटते हुए वो वापस से फोन तक पहुंचा।

'मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया, बाबा... मैंने उन्हें काले मंदिर का राज नहीं दिया!' पूरी जान लगाकर वो फुसफुसाया।

द्वारका शास्त्री ने अपने दांत भींचे, आंसू उनकी आंखों से बह निकले।

'मुझे तुम पर गर्व है, मेरे बच्चे। हम सबको तुम पर गर्व है।'

'बाबा... मेरी पत्नी का ख्याल रखना। और मेरे छोटे बच्चे का भी... बाबा! उसे काशी में मत रहने देना। वादा करो मुझसे, बाबा... वादा करो कि आप उसे सुरक्षित रखोगे। सिर्फ आप ही उसे बचा सकते हो... बाबा...'

उत्तेजित, तड़पती हुई आवाज धीरे-धीरे गुम हो रही थी।

'मैं वचन देता हूं, मेरे बच्चे...' द्वारका शास्त्री ने कहा, तकलीफ से उनकी आवाज दब रही थी।

वो फिर से फुसफुसाए।

'मैं तुम्हें वचन देता हूं... ओ ताकतवर कार्तिकेय!'

बनारस, 2017

'ना.....ग!'

वो अंधियारी, पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था। उस पेचीदा उतराई की खड़ी सीढ़ियों पर रौशनी के नाम पर सिर्फ उसी मशाल का प्रकाश पड़ रहा था, जो उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई थी। दशकों तक काशी के रहस्यमयी संस्थान में वरिष्ठ सदस्य के रूप में रहने के बावजूद, इस रहस्यमय तहखाने में वो पिछले कुछ दिनों में ही पहली बार उतरा था।

उसके हर कदम से उस भयावह अंधेरे और मौत की सी ख़ामोशी में एक गूंज उठती। उसके खड़ाऊं की खटखट उसकी बेचैनी को और बढ़ा रही थी। वो बार-बार पसीने पोंछते हुए, प्रभु विष्णु की प्रार्थना बुदबुदा रहा था। उसे यकीन नहीं हो पा रहा था कि धरती में कितनी गहराई पर यह तहखाना बना था। उसने इसके बारे में सुना तो कई बार था, लेकिन अपने भयावय स्वप्न में भी उसने कभी यह कल्पना नहीं की थी कि यह जगह इतनी डरावनी और रहस्यमयी होगी।

जब उसने आखिरकार, तहखाने की जमीन पर पैर रखा, तब भी उसे कोई राहत महसूस नहीं हुई। असल में अब उसके काम के मुश्किल हिस्से की शुरुआत हुई थी।

कांपते हाथों से उसने गुफा की दीवार में लगी हुई दो मशालें और जलाईं। धीरे-धीरे अंधकारमय कक्ष अग्नि की नारंगी लौ से प्रकाशित हो गया।

अब जाकर तहखाने का वास्तविक विस्तार दृश्यमान हो पाया था। गुप्त कक्ष काले पत्थर से बना था, जिस पर पुराण में वर्णित, भगवान शिव और भगवान विष्णु की प्राचीन दानवों पर प्राप्त विजय गाथाएं, आकर्षक नक्काशी के रूप में उकेरी गई थीं। उन कलाकृतियों की उपस्थिति ने ही उसे आगे बढ़ने का हौसला दिया। वह सावधानी से एक लंबे, अंधियारे रास्ते की तरफ बढ़ा, जो तहखाने के केंद्र में बने कक्ष की ओर जा रहा था। उसे अपने गले में गांठ सी बनती महसूस हुई। भय उस पर दोबारा से हावी हो रहा था। और क्यों नहीं?

वह अब स्याह, मटमैले रास्ते से गुजर रहा था।

वो रास्ता जो उसे उस *जीव* तक ले जाने वाला था।

इस रहस्यमयी, अति-महत्वपूर्ण अतिथि के लिए सारे सम्मान के बावजूद भी वो उसे किसी और विशेषण से नहीं पुकार पा रहा था।

राह के मध्य में पहुंचकर, उसने रीढ़ में सिहरन उत्पन्न कर देने वाला हरे रंग का प्रकाश देखा। एक बार फिर से, उसका दिल धड़कना भूल गया। उस गुप्त तहखाने में यह उसका दूसरा चक्कर था, लेकिन फिर भी उसके मन से वो पहली बार वाला प्रभाव नहीं निकला

था। दूर से आता प्रकाश अपने स्थान से हिला, और उनके अलौकिक अतिथि के पृष्ठ पर तेज दिखाई दिया।

और फिर उसने सुनी। वो आवाज जो दीवारों, छतों और दीवारों पर बनी प्रतिमाओं से आती जान पड़ रही थी। वो नसों को सुन्न कर देने वाली फुफकार थी।

किसी विकराल, आदिकालीन सर्प की फुफकार!

वो नहीं जानता था कि यह पारलौकिक आवाज कहां से आ रही थी। लेकिन यह देव-राक्षस मठ के परतदार-त्वचा वाले अतिथि की उपस्थिति की घोषणा सी करती प्रतीत हो रही थी। उस मध्यकालीन तहखाने से आती वो ठंडी, निर्मम फुफकार बता रही थी कि वहां किस ने उपस्थिति दर्ज कराई थी...

'नाग...'

'ना.....ग...'

'ना.....ग...'

वो निर्मम फुफकार उस तहखाने के प्रत्येक कण, प्रत्येक कोने से आती जान पड़ रही थी।

और भय के निष्ठुर तीर की तरह, उसने पुरोहित जी की आत्मा को भी भेद दिया।

अपने दोनों हाथों से अंजुली बना उसने उस बाल्टी से दूध लिया, जो पुरोहित जी उसके लिए लेकर आए थे। उसके लंबे बालों ने पूरी तरह उसका चेहरा ढंक रखा था, और बीस फुट की दूरी से भी वृद्ध पुजारी समझ सकता था कि उनका यह मेहमान आकार में बहुत बड़ा था, शायद आठ फुट से भी कुछ अधिक। यद्यपि उसकी आकृति इंसानों की तरह ही थी, लेकिन उसकी त्वचा सरीसृप प्रजाति की थी। और भयग्रस्त होने के बाद भी, पुरोहित जी सहमत थे कि उसकी परतदार त्वचा से जो तेज निकल रहा था, वैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

पुरोहित जी का मुंह सूख गया, जब उन्होंने उसके पैर पर एक कोबरा को रेंगते हुए देखा। उन्होंने नीचे देखने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वो जानते थे कि वहां क्या होगा। दर्जनों जहरीले किंग कोबरा इस सर्प-मनुष्य के दास थे। लेकिन कभी भी उन्होंने उससे मिलने आए किसी आगंतुक को डसा नहीं था—अभी पुरोहित जी आगंतुक थे। कोबरा अतिथि के बलिष्ठ कंधों, उसकी शक्तिशाली बांह पर हमेशा की तरह विराजमान थे। ये साफ़ था कि वो उसकी इच्छा के दास थे।

उस सर्प मनुष्य के सम्मान में हाथ जोड़ने से पुरोहित जी स्वयं को रोक नहीं पाए। उसमें कुछ तो चुंबकीय आकर्षण था। और फिर अगर शक्तिशाली द्वारका शास्त्री ने पुरोहित जी से कहा था कि उस अतिथि की देखभाल ठीक वैसे ही करना, जैसे तुम स्वयं भगवान शिव की करते हो, तो जरूर उसकी कोई तर्कपूर्ण वजह होगी।

लेकिन वो मूलभूत भय, जो उस पवित्र 'जीव' की उपस्थिति में आध्यात्मिक रूप से संपन्न, पुरोहित जी को भी हो रहा था, उसने दूसरे सभी भावों को दबा दिया। उस रहस्यमयी अतिथि के लिए मीठा दूध पहुंचाने के अपने कर्तव्य के बाद, बुद्धिमान पुजारी ने वहां से चले जाने का निर्णय लिया।

'प्रभु, अब मैं जाने की आज्ञा चाहता हूं,' पुरोहित जी ने विनम्रता से अपना सिर झुकाकर कहा।

तेजस्वी अतिथि ने सिर हिलाकर आज्ञा दी, उसका सिर अभी भी उसकी हथेलियों में था। लेकिन जैसे ही पुरोहित जी मुड़ने को हुए, उस अतिथि ने अपना सिर उठाया। यद्यपि उसके लंबे बाल अभी भी उसके चेहरे पर पड़े हुए थे, लेकिन उसकी तेज आंखों ने देव-राक्षस मठ के पुजारी को देखा, और पुजारी भय से बेहोश होते-होते बचा।

वो किसी मनुष्य के नेत्र नहीं थे। वो सीधे अंधेरे को भेदकर, काले आसमान में भयावह सूर्य के समान चमक रहे थे।

वो एक अनश्वर, आदिकालीन सर्प के पीले और काले नेत्र थे।

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व

'भगवान ने... हमें त्याग दिया!'

वो नगर की सीमाओं पर बनी दीवारों से उसे देख रहे थे। वो भारी सेना से घिरे उनके द्वार की तरफ किसी निर्भीक सिंह की तरह बढ़ रहा था।

जिन लोगों ने उसे पहले देख रखा था, उन्हें भी वो शानदार ढंग से कुछ भिन्न दिखाई पड़ रहा था। तूफानी रात के इस अंधियारे और झिलमिलाते मशालों के प्रकाश में भी, हड़प्पा के उस सूर्य पुत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई पड़ रहा था।

उनमें से कोई भी नहीं जानता था कि वो बदलाव क्या था। वो नहीं जानते थे कि वो बदलाव हुआ कैसे था। क्योंकि उनमें से किसी को भी नहीं पता था कि पिछले कुछ दिनों से मनु किस दैवीय अस्तित्व के साथ था।

मनु का व्यक्तित्व, अधिक नहीं तो, अपने महान पिता की तरह ही आंखें चौंधिया देने वाला था। उसकी एक झलक भर से सैकड़ों हड़प्पावासियों की आंखों से दुख और

पछतावे के आंसू बह निकले। वो मानने लगे थे कि अगर हड़प्पा का सूर्य जीवित होता तो ये सब कोहराम नहीं आया होता।

अगर विवास्वन पुजारी जीवित होता तो इस अवश्यंभावी प्रलय को भी टाला जा सकता था।

शायद वो सही सोच रहे थे।

उसके दाहिनी तरफ उसकी प्रिय साथी तारा थी। वो उसके साथ किसी योद्धा-राजकुमारी की तरह घुड़सवारी कर रही थी, उसकी कमर पर उसकी तलवार लटकी हुई थी। उसके हाथ में उसका पसंदीदा फरसा था, मानो वो अकेले ही पूरी फौज का सामना करने के लिए तैयार थी। पंडित सोमदत्त मनु के बाईं तरफ था। उसकी सम्मानित उपस्थिति उस पल को अधिक विश्वसनीय और गंभीर बना रही थी।

अपने निजी योद्धाओं और सोमदत्त की टुकड़ी के अतिरिक्त, मनु के झंडे तले आने वाले मत्स्य-प्रजाति के सैनिकों ने उसकी सैन्य श्रेष्ठता को बढ़ा दिया था। हड़प्पा के निवासियों और सैनिकों ने कभी ऐसी अपराजेय सेना नहीं देखी थी। जिस तरह मत्स्य-प्रजाति के सिपाहियों ने अपनी एकताल और एकाकार भावों से मनु को चकित कर दिया था, वैसे ही अब हड़प्पा के वासी मुग्ध थे। वो सभी निर्भीक और अपराजित लग रहे थे।

द्वार से सौ कदम दूर रहने पर, मनु ने अपनी दाहिनी मुट्ठी ऊपर उठा दी। यह उसकी सेना को रुकने का आदेश था। कुछ ही पलों में, घोड़ों के चलने और हथियारों के खनखनाने की आवाज शांत हो गई। हड़प्पा के वासी पूरी तरह खामोश थे, और वो नगर की दीवारों में बने झरोखों से झांक रहे थे। वो नहीं जानते थे कि विवास्वन पुजारी के बेटे से क्या उम्मीद करें। क्या मनु नगर का विनाश करने आया था? क्या वो अपने अपकृत अभिभावकों के भयानक अंत का बदला लेने आया था?

तेज हवाओं और लगातार गरजते बादलों के बीच बस ऐसी ही फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

मनु घोड़े से उतरा और उसके एक सिपाही ने उसे मशाल पकड़ाई। उसने सोमदत्त को देखा, जिसने धीमे से सिर हिलाकर उसे अपना समर्थन दिया। वह धीरे-धीरे लेकिन दृढ़ कदमों से नगर की दीवारों की तरफ बढ़ा, वो जानता था कि डरे हुए हड़प्पावासी वहां से उसकी बात सुन पाएंगे। उनके नजदीक पहुंचकर, मनु ने अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाली, सबको दिखाने के लिए उसे उठाया, और फिर उसे जमीन पर गिरा दिया, सबको किसी धातु के गिरने की तेज आवाज सुनाई दी। वो उन लोगों को भरोसा दिलाना चाहता था, जो कभी उसके महान पिता को प्रेम करते थे कि वो वहां उन्हें नुकसान पहुंचाने नहीं आया था।

लेकिन वो नहीं जानते थे कि मनु वहां सिर्फ उन्हें ही नहीं, बल्कि समग्र मानवजाति को बचाने आया था। पुरुषों को, महिलाओं को और बच्चों को। वृद्ध और युवाओं को। धनी और निर्धनों को। पापियों और संतों को। उन सबको।

वो वहां उन्हें निश्चित विनाश से बचाने आया था।

वह उन्हें प्रलय से बचाने आया था!

'हड़प्पावासियों, मेरी बात सुनो!' मनु ने उन हजारों लोगों से चिल्लाकर कहा, जो ऊंची दीवारों के पीछे एकत्र हो गए थे, वो अपनी गर्दन ऊंची करके उस आकर्षक युवक की एक झलक देखना चाहते थे, जो उन्हें संबोधित कर रहा था।

'हड़प्पा में ऐसी प्रलय आने वाली है, जिसकी कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी!' उसने कहा। 'ये बर्फीला तूफान जो भूमि को भूखे अजगर की भांति निगल रहा है; ये कभी न रुकने वाली बारिश, जिसने हमारी आत्मा तक को भिगो दिया है; गरजते बादलों की यह दहाड़, किसी शैतान की तरह आग उगल रही है—ये और कुछ नहीं बल्कि उस विनाश की अशुभ चेतावनी है, जो आर्यवर्त की तरफ बढ़ता चला आ रहा है!'

महानगर के वासी ये सुनकर स्तब्ध थे। पिछले कुछ दिनों से हो रही अप्राकृतिक, दिल को दहला देने वाली घटनाओं की वजह से वो कुछ भी मानने को तैयार थे। हड़प्पा के आम जनों के बीच एक विशिष्ठ व्यक्ति भी खड़ा था, जिसने स्वयं को सिर से लेकर पैर तक दुशाला से ढंक रखा था। वो भी दूसरे लोगों की ही तरह विवास्वन पुजारी के बेटे के मुख से निकली बातों को सुनने के लिए उत्सुक था।

वो पंडित चंद्रधर था, हड़प्पा का कुछ ही दिनों के लिए बना, बदकिस्मत राजा।

'ओ हड़प्पावासियों जल का एक विशाल पर्वत आपके नगर की तरफ बढ़ रहा है! एक विनाशकारी प्रलय, जो समस्त बसावट को एक प्रहर से भी कम समय में निगल जाएगी। आपको अपने बच्चों को बचाना होगा। आपको स्वयं को बचाना होगा। आपको मुझ पर विश्वास करना होगा! हमें तुरंत यह नगर खाली करना होगा... अभी!'

दीवार की मुंडेर पर पसरा मौत का सन्नाटा अब फुसफुसाहट में बदल गया। क्या इस युवक का भरोसा किया जा सकता था? क्या उसने वो जल पर्वत देखा था, जिसकी वो बात कर रहा था? और अगर उसने देखा था, तो वो उससे कैसे बचा?

'ओ सूर्य पुत्र, हमें आपकी बात का भरोसा क्यों करना चाहिए?' किसी ने चिल्लाकर पूछा। 'आने वाले भविष्य के बारे में आप इतने निश्चित कैसे हैं?'

अब तक, सोमदत्त भी आगे बढ़कर मनु के पास पहुंच गया था। हड़प्पा के सम्मानित अभियंता को हर कोई पहचानता था और उसके अभिवादन में बहुत से हाथ जुड़ गए। लोग जान गए थे कि वो सोमदत्त ही था जो मुश्किल समय में हड़प्पा के सूर्य के साथ खड़ा था। इस बात ने भी सोमदत्त के व्यक्तित्व को अधिक पूज्य बना दिया था। आज प्रत्येक हड़प्पावासी सोमदत्त बनना चाहता था।

'चर्चा और बहस का समय निकल चुका है, मित्रों। हर गुजरता पल हमें मृत्यु के जबड़े के और करीब ले जा रहा है,' सोमदत्त ने तेज आवाज में कहा। 'यह युवक महान विवास्वन

पुजारी का पुत्र है—उस व्यक्ति का, जिसने इस नगर और इसके निवासियों को अनेक आपदाओं से बचाया था। आपको इस पर भरोसा करना ही होगा। मैं आपसे विनती करता हूं। इस अनमोल पुत्र पर भरोसा करो!

सत्यव्रत मनु का विश्वास करो!'

शापित नगर के बहुत से लोगों ने एक झटके में ही अपने घर त्याग दिए थे—और अपने बच्चों और कुछ बहुमूल्य सामान को गठरी में बांधकर साथ ले लिया था। दूसरे लोग अभी भी नगर की दीवारों पर खड़े संदेह से उन्हें देख रहे थे।

अचानक एक तेज आवाज रात्रि की बयार को चीरती हुई सुनाई दी।

'ईश्वर ने... हमें त्याग दिया है!' एक वृद्ध महिला चिल्लाई।

उस कोलाहल भरी रात्रि में, उसकी कांपती हुई भयावह आवाज ने सबके दिल को दहला दिया था।

'नहीं, उन्होंने हमें नहीं त्यागा है!' मनु ने प्रत्युत्तर में कहा।

'कम से कम उनमें से एक ने हमें नहीं त्यागा है...' एक पल बाद ही उसने स्वयं से बुदबुदाते हुए कहा।